बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

वर्ग :	स्नातक तृतीय खण्ड								पृष्ठ : 01	दिनांक : 30.9.2020
प्रतिष्ठा	✓	अनुषंगिक	X	अनुपूरक	X	रा०भा० हिन्दी	X	अहिन्दी	X हिन्दी	पत्र :
व्याख्यान का विषय :	आदिकालीन हिन्दी भाषा के विकास का संक्षिप्त परिचय।									
प्राध्यापक :	— डॉ. उमेश कुमार									

मध्यकालीन फारसी तथा अरबी साहित्य में भारत की भाषा के लिए 'जबाने-ए हिन्द' शब्द का प्रयोग किया गया था। इसके बाद अरबी आदि अनुवादों में भी यही बात कही गई है। उस समय पंचतंत्र और महाभारत आदि भारतीय ग्रंथों के अनुवाद की मूल भाषा को 'जबाने-ए-हिन्द' कहा गया। मिनहाजुस्सिराज जब 1227 में भारत आया तो अपनी पुस्तक 'तबकाते नासिरी' में लिखा है कि 'जबाने-ए-हिन्द' में विहार का अर्थ 'मदरसा' है। 1333 ई० में इब्नबतूता तारन नगर के विषय में लिखता है — "किताबत आलाबाज अलजदरात बिल हिंदी" अर्थात कुछ दीवारों पर हिन्दी में लिखा था।

सर्वप्रथम 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग मुसलमानों द्वारा ही किया गया था। 'जफरनामा' नामक ग्रंथ में हिन्दी शब्द का प्रयोग मिलता है। कबीरदास ने लिखा था - "संस्कृत कबीरा कूपजल भाषा बहता नीर।" अन्य कवियों ने भी इस तथ्य को स्वीकारा है।

भाषाशास्त्रीय दृष्टि से 'हिंदी' खड़ीबोली के उस रूप को कहा जाता है जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और दिल्ली, मेरठ, बिजनौर, अंबाला क्षेत्रों की बोली का विकसित रूप है। ऐतिहासिक विकास क्रम में यह 'पश्चिमी हिन्दी' के अन्तर्गत आती है।

भारतीय आर्य भाषा-परिवार की प्राचीनतम भाषा वैदिक संस्कृत अथवा 'छंदस' कही जाती है जिसका प्रयोग वेदों और ब्राह्मण ग्रंथों में हुआ है। वैदिक संस्कृत अथवा 'छंदस' को व्याकरण के जटिल नियमों में बाँधकर जो शुद्ध रूप दिया गया उसे 'संस्कृत' अथवा 'लौकिक संस्कृत' कहा जाता है।

संस्कृत की जनभाषा अथवा आम जन की भाषा प्रचलित हुई जिसे हम प्राकृत के नाम से जानते हैं। उसे मध्यकालीन आर्य भाषा भी कहा जाता है। 'प्राकृत' शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृति' से है अतः 'प्राकृत' का अर्थ जनसाधारण की प्रकृत (बोलचाल) की भाषा। क्षेत्र-भेद से प्राकृतों के पाँच रूप — शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री और पैशाची विकसित हुए। मध्यकालीन आर्य भाषाओं के विकास का अंतिम सोपान अपभ्रंश है। अपभ्रंश के विविध रूपों से ही आधुनिक आर्य भाषाओं — हिन्दी, बंगला, पंजाबी, मराठी, असमी, उड़िया आदि का विकास हुआ।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है — "मध्यकालीन आर्य-भाषाओं के अंतिम रूप अपभ्रंशों से तृतीयकाल की आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का आविर्भाव दसवीं शताब्दी ईस्वी के लगभग हुआ होगा।"

क्रमशः